

www.citizensforchange.in/ | info@ citizensforchange.in

An online webinar on Deaddicting and Inspiring Youth and Adolescents (DIYA) by Centre of Excellence for Youth Education and Empowerment, Citizens for Change Foundation (CFCF) in association with United Nations Development Programme (UNDP) was held on 26th June 2021 on the occasion of International Day of Drug Abuse and Trafficking.

#### The dignitaries invited were:

- 1. Shri Arun Jha-IAS (Retd.) Former Secretary, Government of India
- 2. Prof. Sanjay Dwivedi- Director General, Indian Institute of Mass Communication
- 3. Shri Sanjay Jha- IPS, ADGP, Telecommunications, **Madhya Pradesh**
- 4. Dr. Sanjay Siddhartha- Head of Psychiatry, Clinical Department, Miramichi, Canada
- 5. Dr. Ashish Deshpande- Consultant Psychiatrist, Head, Mental Health, Samarpan, Mumbai
- 6. Shri Kumar Saket- Head of State Office, UNDP, Madhya **Pradesh**
- 7. Dr. Shailendra Srivastava- IPS ( Retd.), Former DG and Chairman, CFCF
- 8. Dr. Abdul Tahir, Chief Editor, Saransh Times and **Advisor, CFCF**

### DR. SHAILENDRA SRIVASTAVA



The session was started with a welcome note presented by Dr. Shailendra Srivastava- IPS ( Retd.), Former DG and Chairman, CFCF. He gave a brief introduction about the Citizens for Change Foundation and its purpose. He shared the importance of how well we need to be acquainted with the havoc of substance abuse in the current scenario and the need to tackle this problem as soon as possible so as to avoid a condition where it would be too late to handle.

He walked the audience through the purpose of the webinar which is to invite a pool of knowledge to get a stream of good ideas that can be constructively used to bring about a desired change. Later, he introduced all the guest speakers and their topic of discussion.

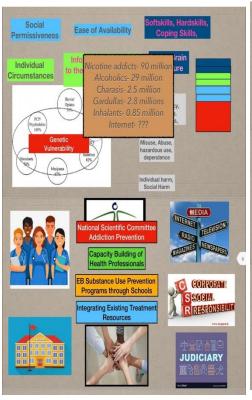
### DR. ASHISH DESHPANDE

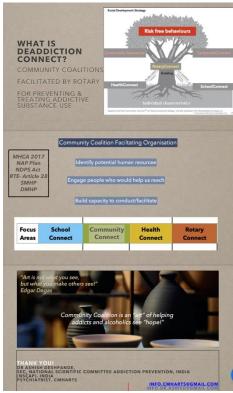


Dr. Ashish Deshpande- Consultant Psychiatrist, Head, Mental Health at Samarpan then continued the webinar and briefed the audience about the current substance abuse scenario through a presentation. He quoted "Tobacco and alcohol together are one of the largest killers in the world and many of the deaths that occur because of tobacco and alcohol are mainly because of medical illnesses which are precipitated by tobacco and alcohol. Most of the substance use disorders begin at a young age. So, if the age of 1st exposure is below 17 years then we know that the brain gets involved in a different way than if it happens after the 21st year of life". He explained the effects of substance abuse on mental health and the reason behind it. "Age of first exposure to most of the addictive substances in India happens between the ages 12 to 15 and if it happens below the crucial age of 17 then the chances of social damage associated is likely to increase. The use of mobile and Internet has also increased in young children. All this happens because of something that has changed in society. There is peer pressure, there is change in perception towards these chemicals within the families and the immediate surroundings, ease of availability and social permissiveness". He mentioned that addiction is a progressive disease as it forces the person to increase the quantity over time hence resulting in misuse, abuse, hazardous use, dependence, individual harm and social harm. He discussed the status of treatment providers at national level like National Scientific Committee Addiction Prevention, many departments in tertiary hospitals are opening up de-addiction medicine branches, evidence based substance use prevention programmes are also available which can be presented through schools or media. He emphasised on community coalition to create facilitating structures which will be helpful to make people aware of evidence based interventions. He concluded his session with the quote "Community coalition is an art of helping addicts and alcoholics see hope".

#### Presentation by Dr. Ashish Deshpande







#### PROF. SANJAY DWIVEDI



Taking the discussion forward, Prof. Sanjay Dwivedi- Director General at Indian Institute of Mass Communication shed light on media's role in eradicating substance abuse. He said, "भारत में नशे की समस्या को अगर हम चार आर्य सत्यों की कसौटी पर कसते हैं तो पहले दो बिंदुओ, यानी भारत में नशा है और नशे का कारण है, इस पर कोई विवाद नहीं। लेकिन बाद के दो सत्यों को अगर हम देखते हैं तो बहुत कम लोग हैं जो नशे के निवारण का मार्ग अपनाते हैं और इसका निवारण पूर्ण रूप से कर पाते हैं। किसी भी परिवार का बेटा या बेटी नशे के दलदल में फँस जाता है तो वह व्यक्ति ही नहीं उसका जो समूचा परिवार तबाह हो जाता है। ड्रग्ज़ और नशा एक ऐसी भयंकर बीमारी है जो अच्छे- अच्छे परिवारों को हिला के रख देती है। हमें अपने समाज की चिंता व्यापक रूप से करनी पड़ेगी। जब बच्चा बुराई में फँस जाता है तो हम बच्चे को ही दोषी मानते हैं जबिक मेरा मानना है कि नशा बुरा है, बच्चे का कोई दोष नहीं है, नशे की लत बुरी है। हम आदत को बुरा माने, नशे को बुरा माने और उसे दूर करने के लिए क्या रास्ते अपनाए जा सकते हैं उनके बारे में विचार करें। अगर हम बच्चे को उपेक्षित या अपमानित करेंगे तो वो और भी नशे की गिरफ़्त में फँस सकता है। ये अपने आप में साइको- सोशल-मेडिकल प्रॉब्लम की तरह हमारे सामने है और हमको उसे उसी तरह से ट्रीट करना पड़ेगा। मुझे लगता है कि युवाओं को नशे के ख़िलाफ़ जागरुक करने में मीडिया की बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका है और मीडिया अपना ये रोल बखूबी निभा भी रहा है। वर्तमान समय में मीडिया की जो भूमिका है वो निरंतर बढ़ती जा रही है। नशा देश की गम्भीर समस्या बन गयी है। नशे के ख़ात्मे के लिए हम सबको एकजुट होना पड़ेगा ताकि नशा मुक्त समाज की रचना की जा सके। हमें तथ्य सामने लाने पड़ेंगे और उन तथ्यों के प्रकाश में हमको नए रास्ते खोजने पड़ेंगे। एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में एक दिन में ग्यारह करोड़ रुपए की सिगरेट पी ली जाती है और इस तरह हमारे यहाँ लोग एक साल में पचास अरब रुपए धुएँ में उड़ा देते हैं। ड्रग्स फ़्री इंडिया के सपने को साकार करने के लिए आज हमें विशेष प्रयास करने की आवश्यकता है। इंग्स से अगर बच्चों को बचाना है तो उनको लक्ष्यवादी बनाना पड़ेगा और बच्चे के अंदर यदि लक्ष्य है तो निश्चित रूप से वह किसी प्रकार के नशे का शिकार नहीं बनेगा। मैं समझता हूँ कि जो काम माता- पिता कर सकते हैं वो और कोई नहीं कर सकता इसलिए हमें अपनी पेरेंट्हुड पर ध्यान देना पड़ेगा। सोशल मीडिया पर हम ड्रग्स फ़्री इंडिया का मूर्व्मेंट चला सकते हैं। मेरा मानना है कि मीडिया की एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है की नशा मुक्ति की ऐसी प्रेरणादायक कहानियाँ लोगों के बीच में लेकर आए ताकि इस आदत के शिकार लोग नशे को छोड़ सकें और नशा मुक्त भारत का सपना पूरा हो सके।" in the end, he thanked the audience for their time.

नशीले पदार्थों के उन्मूलन में मीडिया की भूमिका

- प्रो. संजय द्विवेदी, महानिदेशक, भारतीय जन संचार संस्थान, नई दिल्ली हम सबने बौद्ध दर्शन के बारे में सुना है। बौद्ध दर्शन में संसार की जटिलता को समझाने के लिए बुद्ध ने चार आर्येसत्यों की बात की है। ये सत्य हैं - संसार में दुख है। दुख का कारण है। इसका निवारण है। और इसके निवारण का मार्ग भी है। बुद्ध ने दुख के निवारण के लिए अष्टांग मार्ग सुझाया था, जिसमें सम्यक दृष्टि से लेकर समाधि तक के आठ सोपान हैं। भारत में नशे की समस्या को अगर इन चार आर्यसत्यों की कसौटी में कसकर समझना हो, तो पहले दो बिंदुओं, यानी भारत में नशा है और नशे का कारण भी है, इस पर कोई विवाद नहीं है। लेकिन बाद के दो सत्यों को अगर हम देखें, तो बेहद कम लोग हैं जो नशे के निवारण का मार्ग अपनाते हैं और इसका निवारण पूर्ण रूप से करते हैं। जब किसी मां का लाल, किसी परिवार का बेटा या बेटी नशे के दलदल में फंस जाते हैं, तो सिर्फ वो व्यक्ति नहीं, बल्कि उसका पूरा परिवार तबाह हो जाता है। ड्रग्स और नशा ऐसी भंयकर बीमारी है, जो अच्छों अच्छों को हिला देती है। मैं आपको इसका एक छोटा सा उदाहरण देता हूं। पिछले दिनों भारत के प्रधानमंत्री आदरणीय नरेंद्र मोदी जी का एक किस्सा मुझे पढ़ने को मिला। इस किस्से में प्रधानमंत्री लिखते हैं...कि जब मैं गुजरात में मुख्यमंत्री के रूप में काम करता था, तो कई बार मुझे हमारे अच्छे-अच्छें अफसर मिलने आते थे और छुट्टी मांगते थे। तो मैं पूछता था कि क्यों? पहले तो वो बोलते नहीं थे, लेकिन जरा प्यार से बात करता था तो बताते थे कि बेटा बुरी चीज में फंस गया है। उसको बाहर निकालने के लिए ये सब छोड़-छाड़ कर, मुझे उस के साथ रहना पड़ेगा। और मैंने देखा था कि जिनको मैं बहुत बहादुर अफसर मानता था, उनका भी सिर्फ रोना ही बाकी रह जाता था।²

मेरा मानना है कि हमें इस समस्या की चिंता समाज के रूप में करनी होगी। और मैं जानता हूं कि एक बच्चा जब इस बुराई में फंसता है, तो हम उस बच्चे को दोषी मानते हैं। जबकि मेरा मानना है कि नशा बुरा है। बच्चा बुरा नहीं है, नशे की लत बुरी है। हम आदत को बुरा मानें, नशे को बुरा मानें और उससे दूर रखने के रास्ते खोजें। अगर हम बच्चे को दुत्कार देगें, तो वो और नशा करने लग जाएगा। ये अपने आप में एक Psycho-Socio-Medical problem है। और उसको हमें Psycho-Socio-Medical problem के रूप में ही treat करना पडेगा।

मेरा मानना है कि ड्रग्स तीन बातों को अपने साथ लाता है और मैं कहूंगा कि ये बुराइयों वाला Three D है। पहला D है Darkness, दूसरा D है Destruction और तीसरा D है Devastation। नशा एक इंसान को अंधेरी गली में ले जाता है, विनाश के मोड़ पर लाकर खड़ा कर देता है और उसके बाद उस व्यक्ति की

जिंदगी में बर्बादी के अलावा और कुछ नहीं बचता।

युवाओं को नशे के खिलाफ जागरुक करने में मीडिया की अहम भूमिका है। और मीडिया अपना ये रोल बखूबी निभा रहा है। आज मीडिया को युवाओं का सही मार्ग दर्शक बनकर उन्हें मुख्य धारा से जोड़ने की आवश्यकता है। 18वीं शताब्दी के बाद से, खासकर अमेरिकी स्वतंत्रता आंदोलन और फ्रांसीसी क्रांति के समय से जनता तक पहुंचने और उसे जागरुक कर सक्षम बनाने में मीडिया ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मीडिया अगर सकारात्मक भूमिका अदा करे, तो किसी भी व्यक्ति, संस्था, समूह और देश को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक रूप से समृद्ध बनाया जा सकता है। वर्तमान समय में मीडिया की उपयोगिता, महत्त्व एवं भूमिका निरंतर बढ़ती जा रही है। मीडिया समाज को अनेक प्रकार से नेतृत्व प्रदान करता है। इससे समाज की विचारधारा प्रभावित होती है। मीडिया को प्रेरक की भूमिका में भी उपस्थित होना चाहिये, जिससे

समाज एवं सरकारों को प्रेरणा व मार्गदर्शन प्राप्त हो। मीडिया समाज के विभिन्न वर्गों के हितों का रक्षक भी होता है। वह समाज की नीति, परंपराओं, मान्यताओं तथा सभ्यता एवं संस्कृति के प्रहरी के रूप में भी भूमिका निभाता है। आज नशा देश की गंभीर समस्या बनता जा रहा है। समाज से नशे के खात्मे के लिए सामाजिक चेतना पैदा करने की जरूरत है। और यह कार्य मीडिया के द्वारा ही संभव है। नशे के खात्मे के लिए हम सबको एकजुट होना होगा, ताकि नशामुक्त समाज की रचना की जा सके।

इस वर्ष International Day against Drug Abuse and Illicit Trafficking की थीम है "Share Facts On Drugs, Save Lives"। मैं भी आपके सामने कुछ Facts रखना चाहता हूं। अगर हम शराब पीने वाले व्यक्ति का 50 रुपए रोज का खर्च मानकर चलें, तो एक महीने का 1,500 रुपए और सालभर का 18,000 रुपए होता है। एक व्यक्ति अपने जीवन भर में लगभग 50 वर्ष शराब का सेवन करता है, तो 9 लाख रुपए फिजूल खर्च कर देता है। अगर हम सिर्फ एक साल की बचत यानी 18,000 रुपए पोस्ट ऑफिस में जमा कराएं, तो 42 वर्ष और 11 महीने तक इसे रिन्यू कराते रहने पर यह रकम 5 लाख 76 हजार रुपए होती है। जो आपकी पेंशन या बच्चों की शिक्षा के काम आ सकती है। बीड़ी पीने वाले व्यक्ति का बीड़ी और माचिस का कम से कम रोजाना का 10 रुपए खर्च मानें, तो एक महीने में 300 रुपए और सालभर में 3,600 रुपए होते हैं। अगर हम 50 वर्ष का हिसाब लगाएं, तो 1 लाख 80 हजार रुपए फिजूल खर्च में राख हो जाते हैं और कैंसर को हम अलग से न्योता देते हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में एक दिन में 11 करोड़ रुपए की सिगरेट पी जाती है। इस तरह एक वर्ष में 50 अरब रुपए हमारे यहां लोग धुंए में उड़ा देते हैं।

मैं नशे में डूबे हुए उन नौजवानों से पूछना चाहता हूं कि आपको दो घंटे, चार घंटे नशे की लित में शायद एक अलग जिंदगी जीने का अहसास होता होगा। परेशानियों से मुक्ति का अहसास होता होगा, लेकिन क्या कभी आपने सोचा है कि जिन पैसों से आप ड्रग्स खरीदते हो वो पैसे कहां जाते हैं? आपने कभी सोचा है? कल्पना कीजिये! यही डग्स के पैसे अगर आतंकवादियों के पास जाते होंगे! इन्हीं पैसों से आतंकवादी अगर शस्त्र खरीदते होंगे! और उन्हीं शस्त्रों से कोई आतंकवादी मेरे देश के जवान के सीने में गोलियां दाग देता होगा! उस गोली में कहीं न कहीं आपकी नशे की आदत का पैसा भी है, एक बार सोचिये और जब आप इस बात को सोचेंगे, तो आप निश्चित ही नशा मुक्त भारत के सपने को साकार कर पाएंगे। 'ड्रग्स फ्री इंडिया' के स्वप्न को साकार करने के लिए आज समग्र प्रयासों की आवश्यकता है। व्यक्ति को स्वयं, उसके परिवार, यार, दोस्तों, समाज, सरकार और कानून सभी को मिलकर इस दिशा में काम करना होगा। किसी भी व्यक्ति को नशे की लत से बाहर लाना असंभव नही है। यह थोड़ा मुश्किल जरुर है। यदि समग्र प्रयास किए जाएं, तो यह काम आसान हो सकता हैं। हमारे समक्ष ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जिनसे पता चलता है कि लोग नशे की लत से बाहर आए और उन्होंने एक अच्छा नागरिक बन कर राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दिया। एक मजबूत भारत के लिए आवश्यक है कि हम भारत को इंग्स मुक्त देश बनाए।

कुछ लोगों को ऐसा लगता है कि जब जीवन में निराशा आ जाती है, विफलता आ जाती है, जीवन में जब कोई रास्ता नहीं सूझता, तब आदमी नशे की लत में पड़ जाता है। मुझे लगता है कि जिसके जीवन में कोई ध्येय नहीं है, लक्ष्य नहीं है, इरादे नहीं हैं, वहां पर ड्रग्स का प्रवेश करना सरल हो जाता है। ड्रग्स से अगर बचना है और अपने बच्चे को बचाना है, तो उनको ध्येयवादी बनाइये, कुछ करने के इरादे वाला बनाइये, सपने देखने वाला बनाइये। आप देखिये, फिर उनका बाकी चीजों की तरफ मन नहीं लगेगा। इसलिए मुझे स्वामी विवेकानंद के वो शब्द याद आते हैं कि — 'एक विचार को ले लो, उस विचार को अपना जीवन

बना लो। उसके बारे में सोचो, उसके सपने देखो। उस विचार को जीवन में उतार लो। अपने दिमाग, मांसपेशियों, नसों, शरीर के प्रत्येक हिस्से को उस विचार से भर दो और अन्य सभी विचार छोड़ दो'। विवेकानंद जी का ये वाक्य, हर युवा मन के लिये है।

मैं माता-पिता से भी कहना चाहता हूं। हमारे पास आज कल समय नहीं है। हम बस जिंदगी का गुजारा करने के लिए दौड़ रहे हैं। अपने जीवन को और अच्छा बनाने के लिये दौड़ रहे हैं। लेकिन इस दौड़ के बीच में भी, अपने बच्चों के लिये हमारे पास समय है क्या? हम ज्यादातर अपने बच्चों के साथ उनकी लौकिक प्रगति की ही चर्चा करते हैं? कितने मार्क्स लाया, एग्जाम कैसे हुए, क्या खाना है, क्या नहीं खाना है? कभी हमने अपने बच्चे की दिल की बात सुनने की कोशिश की है। आप ये जरूर कीजिये। अगर बच्चे आपके साथ खुलेंगे, तो वहां क्या चल रहा है ये आपको पता चलेगा। बच्चे में बूरी आदत अचानक नहीं आती है, धीरे धीरे शुरू होती है और जैसे-जैसे बुराई शुरू होती है, तो उसके व्यवहार में भी बदलाव शुरू होता है। उस बदलाव को बारीकी से देखना चाहिये। उस बदलाव को अगर बारीकी से देखेंगे, तो मुझे विश्वास है कि आप बिल्कूल शुरुआत में ही अपने बच्चे को बचा लेंगे। मैं समझता हूं, जो काम मां-बाप कर सकते हैं, वो कोई नहीं कर सकता। हमारे यहां सदियों से हमारे पूर्वजों ने कुछ बातें बड़ी विद्वत्तापूर्ण कही हैं। और तभी तो उनको स्टेट्समैन कहा जाता है। हमारे यहां कहा गया है –

5 वर्ष लौ लीजिये दस लौं ताड़न देई सुत ही सोलह वर्ष में मित्र सरिज गनि देर्ड

यानी बच्चे की 5 वर्ष की आयु तक माता-पिता प्रेम और दुलार का व्यवहार रखें, इसके बाद जब पुत्र 10 वर्ष का होने को हो, तो उसके लिये अनुशासन होना चाहिये। और जब बच्चा 16 साल का हो जाये, तो उसके साथ मित्र जैसा व्यवहार होना चाहिये। खुलकर बात होनी चाहिये। मुझे लगता है कि हमारे पूर्वजों द्वारा कही गई ऐसी अनेक बातों का उपयोग हमें अपने पारिवारिक जीवन करना चाहिए।

मीडिया का आज एक महत्वपूर्ण अंग है सोशल मीडिया। हम में से जो लोग सोशल मीडिया में एक्टिव हैं, उनसे मैं आग्रह करता हूं कि हम सब मिलकर के Drugs Free India हैशटैग के साथ एक आंदोलन चला सकते हैं। क्योंकि आज ज्यादातर बच्चे सोशल मीडिया से भी जुड़े हुए हैं। अगर हम Drugs Free India हैशटैग,को आगे बढायेंगे, तो लोकशिक्षा का एक अच्छा माहौल हम खड़ा कर सकते हैं। हम बचपन से सुनते आये हैं कि "दु:ख बांटने से कम होता है और सुख बांटने से बढ़ता है।" मीडिया की ये जिम्मेदारी है कि वो नशा मुक्ति की ऐँसी प्रेरणादायक कहानियां लोगों तक पहुंचाए, ताकि इस आदत के शिकार लोग नशा छोड़ने की प्रेरणा ले सकें और नशा मुक्त भारत का सपना साकार हो

नशे की लत के शिकार अधिकतर लोगों का ये कहना है कि वो अब इस आदत को नहीं छोड़ सकते। ये उनके लिए संभव नहीं है। मैं ऐसे लोगों को असंभव को संभव बनाने की एक छोटी सी कहानी सुनाना चाहता हूं।

हम सभी ने बास्केटबॉल के मशहूर खिलाड़ी माइकल जॉर्डन का नाम सुना है। माइकल का जन्म एक बेहद गरीब परिवार में हुआ था। जब माइकल 13 साल के थे, तब उनके पिता ने उन्हें अपने पास बुलायाँ और एक पुराना और इस्तेमाल किया हुआ कपड़ा देकर पूछा कि, बताओं इस कपड़े की कीमत कितनी होगी? माइकल थोड़ा सोचने के बाद बोले ये 1 डॉलर का होगा। तो उनके पिता ने उनसे कहा तम्हें कछ भी कर के बाजार में जाकर इस कपड़े को 2 डॉलर में बेच कर

आना है। मॉइकल ने सोचा कि ऐसा क्या किया जाये जिस से इस पुराने कपड़े के 2 डॉलर मिल सकें। उन्होंने उस कपड़े को अच्छे से धो दिया और पास के रेलवे स्टेशन पर जाकर 5 घंटो की कड़ी मेहनत के बाद उसे 2 डॉलर में बेच दिया।

15 दिनों के बाद उनके पिता ने फिर से वैसा ही एक कपड़ा दिया और कहा कि जाओ इसे 20 डॉलर में बेच कर आओ। इस बार माइकल को थोडा सा आश्चर्य हुआ कि भला इसके 20 डॉलर कौन देगा। लेकिन उन्होंने फिर से अपना दिमाग लगाया और उस कपडे पर मिकी माउस का स्टीकर लगा दिया और ऐसे स्कूल के सामने जा कर खड़े हो गये, जहां ज्यादातर अमीर घरों के बच्चे पढ़ने आते थे। उस स्कूल में पढ़ने वाले एक छोटे से बच्चे ने अपने पापा से जिद करके उस कपड़े को 25 डॉलर में खरीद लिया। कुछ दिनों के बाद माइकल को उनके पिता ने फिर एक कपडा दिया और कहा कि इसे 200 डॉलर में बेच कर आओ। इस बार माइकल को लगा कि ये तो असंभव है। लेकिन फिर भी उन्होंने हार नहीं मानी। उन दिनों उनके शहर में एक बहुत प्रसिद्ध अभिनेत्री फिल्म की शूटिंग के लिए आई हुईं थीं। माइकल वहां पहुंचे और पुलिस के सुरक्षा घेरे को तोड़ कर कपडे पर उस एक्ट्रेस का ऑटोग्राफ लेने में कामयाब हो गये। अगले दिन माइकल बाजार में उस ऑटोग्राफ वाले कपड़े को 200 डॉलर में बेचने के लिए गए। और एक अमीर आदमी ने उस कपड़े को 200 की जगह 2000 डॉलर में खरीद लिया। जब माइकल पैसे लेकर घर पहुंचे और अपने पिता को पूरी कहानी सुनाई, तो उनके पिता की आंखों में आंसूँ आ गए और वे बोले कि बेटा तुम अँब अपने जीवन में कुछ भी कर सकते हो। और आप देखिए कि माइकल जॉर्डन आज एक ऐसे व्यक्ति हैं, जो युवा पीढ़ी के लिए एक मिसाल हैं।

भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने नशा मुक्ति के खिलाफ मुहिम की शुरुआत की है। इसलिए मुझे लगता है कि हम सभी को इन पंक्तियों को याद रखकर नशा मुक्त भारत का निर्माण करना चाहिए।

रोकर्नी होगी अब बर्बादी बदलना होगा अब ये जमाना आओ मिलकर कदम बढ़ाएं नशा मुक्त भारत है बनाना संदर्भ:

- Bapat PV; 2500 Years of Buddhism (2018), Publications Division, Ministry of Information and Broadcasting, New Delhi
- 2. Modi Narendra; Social Harmony (2015), Prabhat Prakashan, New Delhi
- 3. MacDougall C. Robert; Drugs & Media: New Perspectives on Communication, Consumption, and Consciousness (2011), Continuum, New York

## DR. SANJAY SIDDHARTHA



Dr. Sanjay Siddhartha- Head of Psychiatry, Clinical Department of Miramichi, Canada presented his views on challenges in addiction. He discussed the problems of addiction which are withdrawal and tolerance. A person who is affected with the substance cannot be convinced easily to give it up and to fully participate because that person is not only in a way getting used to it but at some level may enjoy it and more and more is needed with the time which becomes a challenge. He quoted, "when we bring this issue to the medical field, it becomes difficult when the person is not fully involved in the treatment process. There are no clear treatment modalities prescribed yet but if we are dealing with opioid kind of addiction, the pain killers, there are tangible ways that it can be dealt with." He shared that cognitive behaviour therapy and motivational enhancement treatment are somewhat helpful but there are only few effective medical treatments available for dependence, dependence nicotine opioid and alcohol dependence. The psychotherapeutic manoeuvres which are established by science are very few and the way they are practiced is questionable. He concluded his session by sharing that the private sector interventions in rehabilitation and de-addiction should be closely monitored as to whether they are following the basic scientific principles and to ensure that any vulnerable patient is not being exploited financially.

## SHRI SANJAY JHA



Shri Sanjay Jha- IPS, ADGP, Telecommunications shared his experience as Deputy Director General, Operations in Narcotics Control Bureau, New Delhi, where he was looking after Northern India, especially Punjab where substance abuse problem was very huge. He apprised the audience on how to prevent substance abuse and the strategies to be followed which are demand reduction, supply reduction and harm reduction. He quoted "Demand reduction is basically to assess the magnitude of substance abuse. In India, in 2001, Ministry of Social Justice with UNODC conducted a survey and after 2001 till 2018, there was no survey at all. In all the developed countries, they conduct periodical surveys and know the extent and pattern of drug abuse but in India we don't have such surveys. There were some surveys in states like Punjab, Jammu and Kashmir and the survey found the onset age of drug abuse in adolescents is-tobacco 12.3 years, alcohol is 13.6 years, heroin is 14.9 years and injectable drug is 15.1 years." The geographical position of India is between two opium producing countries- Afghanistan and Myanmar which is the main cause of substance abuse in northern regions. With time, there is a clear shift from plant based drugs like heroin, charas and cocaine to pharmaceutical drugs like Tramadol. "Pharmaceutical drugs coupled with internet pharmacy, has become the main issue of concern in India. The changing pattern from traditional drugs to pharmaceutical drugs is a recent phenomenon and is picking up very fast. All the drug enforcement agencies have to be very careful about it as drug related deaths are increasing in India." In the end, he suggested that a continuous watch has to be kept on the changing patterns and trends on drug trafficking as well as on their routes to keep a check on them.

## SHRI ARUN JHA



The session was then continued by Shri Arun Jha- IAS (Retd.) Former Secretary, Government of India. He shared his views on how to harness young energy in a productive positive direction. He shared that India has a great demographic advantage and 65% of its population comprises of youth. Hence, it becomes necessary to channel their energy in the right direction. If not, then they can get involved in bad habits which will result in undesirable outcomes. He quoted "The first thing that I would like to point out is that to give a direction and channelize and harness youth in the right direction, we have to teach them hard as well as soft skills. Hard skills, according to me, are those skills which contribute towards making the country into a knowledge economy. For eg. Science, math, digital capabilities enhancement. Now, soft skills that we have to teach Youth is collaboration, team work, respect of each other, interpersonal communication and attitude for service. Now the youth has to be fired by the vision for the future of the country and therefore it must have compassion in it, it must have leadership in it and it has to be imbibed with leadership skills through proper mentorship and coaching." He emphasised on the importance of ethical values, spiritual education and climate change issues (sustainable development practices) for youth.

He pointed out five things which are very important for the young energy to be harnessed in a proper and effective manner:

- We have to spark entrepreneurship amongst Youth. We must i. take them on the path of innovation through competition.
- Entrepreneurship should be grounded for local problems. We ii. have to think about our local problems.
- We must place the youth in decision making bodies in both iii. government and non-government sector.
- We must emphasise on training and a distinct skill set for them. iv.
- We have to create pathways, showcasing and creating case studies of successful youth entrepreneurship.

He concluded by thanking for the opportunity provided to express his thoughts on this important subject.

## SHRI KUMAR SAKET



The way forward was presented by Shri Kumar Saket- Head of State Office at United Nations Development Programme. He shared with the audience that UNODC is the lead agency in dealing with substance abuse. However, UNDP has played an important role within Madhya Pradesh regarding awareness generation about substance abuse amongst youth. He presented his thoughts that only creating substance abuse awareness or taking preventive measures is not the solution and there is no or little evidence on the effectiveness of these measures in India. There is no state wise or district wise data available for public to understand the extent of substance abuse problem. There is a need to evaluate the efforts in prevention of substance abuse and to know what works and what not. He insisted that the factors like why the youth are choosing such path, what are the reasons, etc. should also be closely monitored. He quoted, "There are a lot of families particularly in Delhi and Mumbai and places like the metro cities etc where there are single parent families and children feel neglected, so that is one of the major reasons that youth and adolescents get into substance abuse and they also get into substance abuse because it's kind of glamorised and they want to try new things. So, we need to understand the psychology and then accordingly design the prevention strategies." He suggested to carry out studies at local level to understand the picture more clearly on how substance abuse is affecting Madhya Pradesh.

# DR. ABDUL TAHIR



Vote of thanks was presented by Dr. Abdul Tahir, Chief Editor at Saransh Times and Advisor at CFCF. He expressed his gratitude and sense of indebtedness to Dr. Shailendra Srivastava for giving him this excellent opportunity. On behalf of the foundation he expressed his sincere gratitude to all the speakers for sharing their invaluable experiences, observations and knowledge in the field of substance abuse. He quoted, "Drug addiction is a major global problem and has emerged as a global threat to humanity with the youth being particularly more vulnerable and affected by substance abuse and its consequences. Coupled with societal prejudice and the failure of people to recognise drug addiction as an element prove it to be treated like any other. It has become progressively more important that we spread awareness regarding the problem and its solutions with the special focus on our youth who will take the reins of the world in the times to come." He was hopeful that the audience of the webinar will take a sense of purpose and direction with regard to Substance abuse and that Citizens for Change Foundation will continue to get significant knowledge inputs from the diverse group of experts in the future as well.





#### Centre of Excellence for Youth Education and Empowerment, Citizens for Change Foundation in association with United Nations Development Programme

Presents Webinar on Deaddicting and Inspiring Youth and Adolescents



June 26, 2021 - Time: 5:00 PM to 6:15 PM



Shri Arun Jha, IAS (Retd.) Former Secretary, Government of India



Prof. Sanjay Dwivedi Director General Indian Institute of Mass Communication



Shri Sanjay Jha, IPS



Dr. Sanjay Siddhartha Head of Psychiatry Clinical Department, Miramichi, Canada



Dr. Ashish Deshpande Consultant Psychiatrist, Mumbai Head, Mental Health, Samarpan, Mumbai



Shri Kumar Saket Head of State Office, UNDP, Madhya Pradesh



Dr. Shailendra Srivastava IPS(Retd.) Former DG, Chairman, CFCF



Dr. Abdul Tahir Chief Editor, Saransh Times and Advisor, CFCF